साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

लेखक - डॉ० रिक लिंडल

अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

अध्याय 8

...गतांक से आगे

प्रेम का उद्भव

वृद्ध आत्मा कुछ क्षण के लिये रुकी और फिर कहा, "मैं एक कदम पीछे जाता हूँ और तुम्हे कुछ शब्दों में समझाने की कोशिश करता हूँ कि यह कैसे होता है.

"तुम यह स्मरण करने में सही हो कि मैंने यह कहा था कि प्रेम एकतरफा होता है और यह कि वह प्रतिबिंबित नहीं होता. लेकिन तुम यह स्मरण भी करोगे कि मैंने अपने वर्णन की प्रस्तावना इन शब्दों के साथ दी थी, "सभी गहन उद्देश्यों के लिये." उस एक वाक्य में प्रेम के विकास का वर्णन, वास्तव में, अधिक जटिल है जब तुम आगे चल कर सतह के नीचे देखते हो, क्योंकि यह भी सच है कि प्रेम, अंशों में, अपने स्रोत पर वापिस प्रतिबिंबित होता है."

"उससे तुम्हारा क्या मतलब है? वह कैसे होता है?"

“तुम्हे याद होगा कि प्रेम सभी आत्माओं का मूलतत्व होता है, और यह कि सभी आत्माएं आध्यात्मिक स्तर पर प्रेम से जुड़ी हुई होती हैं. तुम्हारा बाहरी अहम इसे चेतन रूप में नहीं जानता, लेकिन तुम्हारी आत्मा इस सम्बन्ध की अनुभूति हर समय बड़े स्पष्ट रूप से करती है. जब तुम प्यार से किसी की ओर आकर्षित होते हो, जो सम्बन्ध तुम उस व्यक्ति के साथ महसूस करते हो वह प्रेम की उत्तेजना से होता है जो तुम्हारी आत्माओं के बीच होता है.

“इस प्रक्रिया में पहला कदम अपने अंदर के पहलु को पहचानना होता है जिसे तुम आदर्श मानते हो और प्रेम करते हो. एक बार जब तुम इसकी पहचान कर लेते हो, तो तुम उस गुण को दूसरे व्यक्ति पर व्यक्त करते हो. पाने वाल तुम्हारे मंसूबे को ग्रहण करता है, और यदि वह इसे रुचिकर समझता है, तो एक उत्तेजना और ऐसे ही आदर्शीकरण की एक लहर उसके अंदर भी उठती है और तुम्हे व्यक्त की जाती है. यह मंसूबे, जो पारस्परिक रूप से एकमात्र होते हैं, अपने स्रोत पर वापिस प्रतिबिंबित होते हैं जैसे कि एक दर्पण से होते हैं. यह मंसूबे फडफडाते हैं और बढ़ते जाते हैं जब दोनों आत्माएं अपने आदर्श के प्रतिबिम्ब की सुगंध में, जिसे वह प्रेम करती हैं, स्नान करती हैं. परन्तु, इस समय के दौरान एक दूसरी चीज भी विकसित हो रही होती है, प्रेम की एक घटना जिसकी अपनी स्वायत्तता होती है लेकिन फिर भी दोनों व्यक्तियों के मंसूबों का एक अभिन्न पहलू होता है. एक बेहतर उपमा के लिये, तुम्हे एक ‘प्रेम के बुलबुले’ की, जो बन गया है और दोनों व्यक्तियों के ऊपर हवा में तैर रहा है, कल्पना करना उपयोगी होगा, जिसके अंदर प्रेम की मंशा भी जो व्यक्ति एक-दूसरे पर प्रकट करते हैं, सोख ली जाती है. यह प्रेम का बुलबुला उनसे मिल जाता है और उन्हें प्रेम में एक दूसरे से सम्बन्धित महसूस कराता है. वह इसीलिये होता है कि जब तुम प्रेम में होते हो तो तुम अधिक महान, आनंदित, मजबूत, और हर तरह से संवर्धित महसूस करते हो. तुम्हे ऐसे महसूस होता है कि जैसे तुम्हारी आत्मा की शक्ति दुगनी हो गई है, और यह इसलिये होता है क्योंकि यह हो गई है; इस नये जन्म में तुम्हारा प्रेम तुम्हारी आत्मा के साथ मिल जाता है; प्रेम का एक प्रेम-बुलबुला.

“उस समय जो तुम प्रेम महसूस करते हो उसका स्रोत दो-तरफ़ा होता है: एक तरफ तो, यह इस घटना के साथ या प्रेम के जन्म के साथ होता है, प्रेम-बुलबुला जो तुम्हारे साथ मिल जाता है. इस दृष्टान्त में, जब तुम्हारा प्यार प्रेम-बुलबुले में जाता है, तो यह एकतरफा होता है और प्रतिबिंबित नहीं होता. फिर भी, दूसरी तरफ, जो प्रेम तुम महसूस करते हो उसका स्रोत तुम्हारे अंदर के आदर्श के रूप में गुण की पहचान में भी है जिसे तुमने पहचाना है और दूसरे व्यक्ति पर प्रकट किया है, और जिससे तुम प्रेम करते हो. मनोवैज्ञानिक इस दूसरे पहलू को ‘प्रकट करने वाली पहचान’ कहते हैं.”

“प्रकट करने वाली पहचान. वह वास्तव में क्या है?”

“यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे तुम वास्तव में बहुत ज्यादा परिचित हो, लेकिन एक नकारात्मक भावनात्मक दृष्टिकोण से. उदाहरण के लिये, तुम बहुधा स्वयं को बात-चीत के बाद दूसरे व्यक्ति के प्रयोजन पर प्रश्न करते हुए पाओगे. तुम अपने-आप में सोचोगे, ‘वह मुझ पर गुस्सा लग रहा था जब उसने वह कहा था’, या ‘मैं विस्मित हूँ कि जब उसने वह टिप्पणी की थी तो उसका क्या मतलब था?” फिर तुम इस

पर बेचैन होने लगते हो, और तुम उस बेचारे व्यक्ति पर व्यथित और नाराज होने लगते हो. तुम्हे उस पर क्रोध आने लगता है. इस सब को तुम अपने दिमाग में रखते हो और यह मान कर दूसरे व्यक्ति पर प्रकट करते हो कि वह तुमसे परेशान है, बिना उससे किसी प्रकार का स्पष्टीकरण लिये .बेशक, 99% घटनाओं में तुम्हे कुछ समय बाद समझ में आता है कि तुम्हारी गल्ती थी और यह कि यह तुम्हारी कल्पना थी जिसने तुम्हारे ऊपर काबू कर लिया था. यह एक 'प्रकट करने वाली पहचान' का उदाहरण है. इस दृष्टान्त में तुमने अपने विचारों को किसी और पर प्रकट किया है, उन पर दोषारोपण किया और अपनी परेशानी के स्रोत, या क्रोध को, जो तुम्हारे बजाय उनमें से निकल रहा है, को गल्त भाव दे दिया. तुम वास्तव में अपने ही विचारों से परेशान हो गए हो."

"क्या तुम समझ रहे हो?"

"हाँ. इस तरह के प्रकटन से मैं निश्चय ही परिचित हूँ. मैं स्वयं को अक्सर इसे करते हुए पाता हूँ."

वृद्ध आत्मा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ!"

"बिलकुल ऐसी ही चीज होती है जब तुम किसी दूसरे व्यक्ति के लिये प्रेम महसूस करते हो, लेकिन भावना सकारात्मक होती है और उस दृष्टान्त में इसे निहारना बड़ा सुहाना होता है. तुम अपने स्नेहमयी विचार प्रकट करते हो और उससे प्रेम में पड़ जाते हो जब बिलकुल वही विचार प्रतिबिंबित होते हैं, जैसे कि एक दर्पण से, वापिस तुम्हारी ओर. बेशक, यह विचार तुमसे परिचित हैं, क्योंकि वह तुमसे संबंधित हैं, और तुम प्रेम के आदर्शीकरण के साथ, जो वह तुम्हे दर्शाते हैं, अपनी पहचान बनाते हो. यह प्रकट करने वाली पहचान का उदाहरण है, जो तब होती है जब तुम प्रेम में पड़ जाते हो."

"क्या तुम यह कह रहे हो कि यदि मैं किसी से प्रेम करता हूँ तो मैं केवल अपने प्रकटन को प्रेम कर रहा हूँ?'

"हाँ, आंशिक रूप से, तुम ऐसा ही कर रहे हो. तुम्हारे प्रेम की भावना 'प्रकट करने वाली पहचान' और प्रेम-बुलबुले का मिश्रण है जिसका वर्णन मैंने पहले किया था,जो तुम्हारी आत्मा की चेतना का भाग बन जाता है.

"इस प्रक्रिया का एक पहलु से तुम पहले ही अच्छी तरह से परिचित हो - जिस प्रकार के प्रेम का अनुभव तुम्हे इस प्रकट होने वाली पहचान के माध्यम से होता है वह आसक्ति का पर्याय है. आसक्ति एक अस्थाई असाधारण जुनून है जो तुम्हे बाद में पता चलता है कि वह तुम्हारी बेवकूफाना हरकत थी. उन घटनाओं में जब तुम्हे पता चलता है कि तुम्हारी प्रकट करने वाली पहचान को उस व्यक्ति के व्यवहार से, जिसके ऊपर यह प्रकट किया जाता है, समर्थन नहीं मिल रहा है, तो प्रकटन आसक्ति के एक साथ धुंधला पड़ना शुरू हो जाता है, जिस मामले में प्रेम की और अधिक सुगंध प्रेम-बुलबुले में, जो विकसित होना शुरू

हो गया है, नहीं जाती. परन्तु, जब तुम्हे अपनी प्रकट होने वाली पहचान की उस व्यक्ति के व्यवहार से, जिस पर यह प्रकट की जाती है, पुष्टि मिल जाती है, तब तुम्हारी आसक्ति लगातार रहती है, हालांकि समय के साथ-साथ कम असाधारण तरीके से, और प्रेम की सुगंध प्रेम-बुलबुले में जाती रहती है, और तुम्हारी आत्माओं का प्रेम-मिलन स्थापित हो जाता है."

"यह उन सभी आसक्तियों का स्पष्टीकरण करता है जो मुझे हुई थी. पहले तो मैं उस व्यक्ति पर पूरी तरह से आसक्त होता हूँ, लेकिन फिर जब मुझे उसके बारे में जान जाता हूँ, मुझे यह पता चलता है कि वह वो नहीं है जो मैं सोचता था."

"हाँ....बिलकुल ठीक.

"तो, संक्षिप्त में, तुम्हारा प्रेम के सम्बन्ध की जड़ पहले प्रकट करने वाली पहचान में होता है और फिर उसकी जड़ प्रेम के स्वायत्त शरीर में होती है जो तुम्हारे पारस्परिक प्रकटन के फलस्वरूप विकसित होता है, अर्थात प्रेम का बुलबुला. यह इसलिये ही होता है कि लोग ऐसी टिप्पणियाँ करते हैं "हमारे बीच प्रेम है" और "हमने कभी प्यार किया था". प्रेम का स्रोत, जिसकी वह बात कर रहे हैं, प्रेम-बुलबुला है जो उनके बीच विकसित हुआ था. इसका एक अलग अस्तित्व है, और फिर भी यह व्यक्तियों के लिये अभिन्न है जो अपने सम्बन्ध के दौरान इसका प्रेममयी प्रकटन से पोषण करते हैं. एक बार स्थापित होने पर, यह प्रेम-बुलबुला कभी नाश नहीं होता. फिर भी, सम्बन्धों में विपरीत परिस्थितियाँ बाद में इसकी अभिव्यक्ति में बाधा डाल सकती हैं."

रिक्की ने इस पर मनन किया और फिर कहा, "मैं समझता हूँ कि इससे मैं बेहतर महसूस कर हूँ. यद्दपि यह जान कर थोड़ा विनीत लगता है कि उस प्रेम का एक बहुत बड़ा हिस्सा जो मैं महसूस करता हूँ केवल एक 'प्रकट करने वाली पहचान' ही है'.

"फिर क्या कोई भी मुझे वास्तव में मेरे विशिष्ट गुणों के लिये प्रेम नहीं करता?"

"हाँ, वह प्रेम करते हैं, लेकिन केवल तभी जब वह भी विशिष्ट गुणों को अपना आदर्श बनाते हैं. यह आवश्यक नहीं है कि उनमें वो गुण हों, लेकिन वह उन्हें अपना आदर्श मानते हैं और उनके साथ अपनी पहचान बनाते हैं.

"फिर भी, तुम सही में कभी नहीं जानते कि वह तुम में क्या गुण देखते हैं. तुम बस यही जानते हो कि तुम्हे प्रेम महसूस होता है, जो एक भावना है जो तुम उस प्रेम-बुलबुले से लेते हो. लेकिन तुम्हे कभी भी सही-सही कारण का पूरी तरह से बोध नहीं होगा या तुम पूरी तरह से समझ नहीं पाओगे कि तुम्हे क्यों प्यार किया जा रहा है."

"तो क्या लोकप्रिय कहावत, कि तुम किसी और से प्रेम नहीं कर सकते यदि तुम अपने-आप से प्रेम नहीं करते, सही है?"

“हाँ, यह सही है. जब तुम अपने अन्दर वह स्वरूप नहीं पा सकते जिसे तुम अपना आदर्श मान सको और प्रेम कर सको, तो तुम्हारे पास वह गुण प्रकट करने के लिये नहीं है और, परिणामस्वरूप, जिसके साथ प्रेम में पड़ सको ऐसी कोई भी प्रकट करने वाली पहचान नहीं है. इसके अलावा, जब तुम अपने अंदर कोई ऐसा स्वरूप नहीं ढूंढ सकते जिसे तुम अपना आदर्श बना सको और उससे प्रेम कर सको, तो तुम्हारे पास कोई सहारा नहीं है जिसके साथ तुम अपनी पहचान बना सको जब तुम्हे कोई प्रेम दिखाता है तो. जब तुम उस आदर्शीकरण को अपने अन्दर नहीं पाते, तो तुम दूसरे व्यक्ति की परख पर भरोसा नहीं कर सकते जब वह तुम्हे कहता है कि वह तुम्हे प्रेम करता है. तुम स्वत: ही यह मान लोगे कि वह नहीं जानता कि वह किस बारे में बात कर रहा है और यह कि उसके प्रेम का इशारा एक गलतफहमी है, और यह कि उसकी परख एक अवास्तविक आधार पर आधारित है, इसलिये तुम इसे नकार देते हो. फिर भी, जब किसी ऐसे स्वरूप के साथ पहचान बना सकते हो जिसे तुम अपने अंदर आदर्श मानते हो और प्रेम करते हो, तो तुम्हे दुस्रे व्यक्ति के प्रेम की प्रकटन महसूस होती है और तुम तत्काल ही वैसी भावना अपने अन्दर पहचान लेते हो. जब यह उत्तेजना होती है तो तुम अपने अंदर प्रेम महसूस करते हो और वह तुम्हे याद दिलाता है कि तुम्हे आध्यात्मिक रूप से प्रेम किया जा रहा है, और उस क्षण में तुम अपनी भावना का स्रोत अपनी आँख के सामने की वस्तु पर प्रकट करते हो.”

“वाओ! यह दिलचस्प है. जब भी मैं प्रेम में पड़ता हूँ तो मैंने कभी भी परदे के पीछे होने वाली चीजों के बारे में नहीं सोचा.”

“बहुत से लोग इसके बारे में नहीं सोचते. यह तुम्हारी प्रकृति का पहलु है जो तुम्हारी चेतन जागरूकता के नीचे होता है और तुम्हारे इस ध्यान देने की आवश्यकता के बिना ही स्वाभाविक रूप से विकसित होता है. फिर भी, उन घटनाओं में जहाँ बाहरी अहम् और आंतरिक पहचान में सम्बन्ध क्षतिग्रस्त हो जाता है, जो तुम्हारी अंतरदृष्टि के साथ तुम्हारे समर्पक को तोड़ देता है या क्षतिग्रस्त कर देता है, तो समस्याएं अवश्य आती हैं.

“हम इन मुद्दों के बारे में विस्तार से बाद में चर्चा कर सकते हैं, लेकिन आज मुझे अपनी चर्चा को इन संक्षिप्त टिप्पणियों तक ही सीमित रखना चाहिये जो मैंने प्रेम के विषय पर की हैं.”

वृद्ध आत्मा थोड़ा रुकी, “हमने आज अलग-अलग भावनाओं और जो प्रभाव वह तुम्हारी वास्तविकता बनाने में करती हैं पर चर्चा की है.

“लेकिन इससे पहले कि हम समाप्त करें, मैंने जो कुछ आत्मा के अपनी आंतरिक प्रकृति के बारे में शिक्षित होने के बारे में कहा है, उसे इकट्ठा करूंगा और इस प्रक्रिया के बारे में कुछ और तथ्य जोड़ूंगा कि आंतरिक शिक्षण कैसे होता है.”